IMPACT FACTOR 7.50 (SJIAI)

BIHAR SHODH SAMAAGAM

Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 4, Issue 2, April-june, 2026
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.19650082

ISSN : 3048-6971

बाढ़ और उसके सामाजिक – आर्थिक प्रभाव : विशेष संदर्भ 'रेडियो कोसी'

चित्रा साह
शोधार्थी
नागालैंड विश्वविद्यालय
कोहिमा परिसर, मेरिएमा
Email– chitrasah461@gmail.com

शोध – सार :- **'बाढ़'** केवल एक प्राकृतिक आपदा नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी त्रासदी है , जो प्रभावित क्षेत्रों के समाज और वहाँ की अर्थव्यवस्था को काफी गहरे स्तर पर प्रभावित करती है। सामान्य तौर पर हम बाढ़ को एक आपदा के रूप में देखते है, जब अत्यधिक बारिश के कारण नदियों का जल- स्तर बढ़ जाता है, जल स्तर इतना अधिक होता हैं कि नदियों का पानी सामान्य लोगो के घरों तक पहुँच जाता है और उनके जीवन को बुरी तरह प्रभावित करता है, इसे ही बाढ़ कहते हैं। इसके परिणाम स्वरूप ही हम बाढ़ के सामाजिक - आर्थिक प्रभाव को कई पहलुओं के रूप में देखते हैं। इसमें विस्थापन, गरीबी, सामाजिक विघटन, मानसिक कष्ट और आर्थिक अस्थिरता आदि जैसे गंभीर समस्या शामिल हैं । वस्तुतः 'बाढ़' केवल एक जल – संबंधी आपदा नहीं हैं, बल्कि यह लोगों के जीवन , आजीविका स्वास्थ्य और संस्कृति को गहरे स्तर पर भी प्रभावित करती है । इसके समाधान के लिए ही दीर्घकालीन नीतियों , बेहद बुनियादी ढांचे और सामुदायिक भागीदारी की आवश्यकता है।

अगर हम हिन्दी उपन्यासों की बात करें तो सामाजिक-आर्थिक प्रभाव का चित्रण बड़ी ही यथार्थ रूप से किया गया है। हिन्दी उपन्यास अपने शुरुवाती समय से ही सामाजिक – आर्थिक समस्याओं को विषय वस्तु के रूप में अपनी कहानियों में अंकित करती रहती आई है। हिन्दी उपन्यासों में बाढ़ से उत्पन्न विस्थापन, जीविका हानि, सामाजिक विघटन और मानवीय त्रासदी को संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया गया है।

बीज शब्द – विस्थापन, बांध, त्रासदी, संकट, सामाजिक विघटन, भुखमरी, आर्थिक असमानता, दुःख । संत्रास आदि ।

प्रस्तावना – प्राचीन समय से ही विभिन्न तरह की प्राकृतिक आपदाओं से मनुष्य जूझता आया है । ये आपदाएँ समय-समय पर आकर मनुष्य के धैर्य, साहस एवं जीवंतता की परीक्षा लेती रहती है। इन आपदाओं में बाढ़, भूकंप, सूखा, अकाल, तूफान, महामारी आदि का जिक्र किया जा सकता हैं। आपदाओं के कारण ही विश्वभर की न जाने कितनी ही संस्कृति – सभ्यताएं इन आपदाओं के साथ ही समय के साथ ही लुप्त हो गई हैं। भारत का सबसे अधिक बाढ़ -ग्रस्त राज्य बिहार हैं। उत्तर-पूर्वी बिहार के लगभग कई ज़िले हर साल बाढ़ से प्रभावित होते हैं । सन् 2008 के अगस्त – सितंबर महीने में बिहार के उत्तरी – पूर्वी क्षेत्र में भयंकर बाढ़ आई थी। इस समय कोसी नदी पूरे उफान पर थी, और अपने आस -पास के लगभग तीन सौ से अधिक गाँव प्रभावित हुई थी । 2008 में कोसी नदी का तटबंध टूट गया । जिसके कारण सुपौल, मधेपुरा, सहरसा, पूर्णिया , मधेपुरा गाँव विशेष रूप से प्रभावित हुआ था , इसके अलावा भी लगभग 300 से अधिक गाँव कोसी नदी के बाढ़ में जल मग्न हो गया था। इस बाढ़ के कारण लगभग 3.3 मिलियन लोग प्रभावित हुए थे। मौतों की संख्या 434+ (आधिकारिक) और हजारों लोग लापता हो गए । इसके साथ ही भारी संख्या में लोग को आपने गाँव से ही विस्थापित होना पड़ा , लगभग 8 लाख लोग राहत शिविरों के सहारे थे । पूरा का पूरा गाँव ही बह गया था । जिसके कारण पूरे बिहार को आर्थिक नुकसान भी सहना पड़ा , करीब ₹4,500 करोड़+ फसलें 3.3 लाख हेक्टेयर डूबी, 2 लाख मवेशी मरे।

हिन्दी साहित्य में कोसी नदी पर लिखने की परंपरा रेणु जी से शुरू होती है। वस्तुतः कोसी नदी का जिक्र कालिदास के समय से ही किसी न किसी रूप में मिल जाता हैं लेकिन आजादी के बाद की बात कहें तो रेणु जी ने अपने कथा साहित्य तथा रिपोर्टों में भी बड़ी सुंदर ढंग से कोसी तटबंध के आसपास रह रहे जन-जीवन का चित्रण करते दिखते हैं तो इनके अलावा हिन्दी के प्रसिद्ध कथाकार शेखर जोशी की कहानी 'कोसी का घटवार' में भी कोसी नदी का उल्लेख मिलता हैं। 'रेडियो कोसी' आपदा से जुड़ी एक महत्वपूर्ण उपन्यास है, जिसमें मूलतः बाढ़ की समस्या को दिखाया गया है। कोसी नदी का इतिहास काफी पुराना है लेकिन कोसी तटबंध के बाहर और भीतर फसें लोगों के जीवन में कोई खास बदलाव नहीं आया है। इसी समस्या को 'रेडियो कोसी' उपन्यास कोसी वासियों के बीच रेडियो एक माध्यम के रूप में आता है तो उनका जीवन एक नई दिशा की ओर आगे बढ़ती हैं। सन् 2008 में बिहार के कोसी नदी में जो प्रलयंकारी बाढ़ के कारण जो विनाश लीला हुई थी उसी को केंद्र में रख कर

यह उपन्यास लिखा गया हैं । 'रेडियो कोसी' प्राकृतिक आपदा बाढ़ से जुडी एक महत्वपूर्ण उपन्यास है जो कोसी नदी के लोगों के जीवन और संघर्षों को उजागर करता है। उपन्यास कोसी नदी की बाढ़ से प्रभावित लोगों के संघर्ष को दर्शाता है। बाढ़ ने लोगों के जीवन को तबाह कर दिया है और उन्हें अपना घर छोड़ने के लिए मजबूर किया है। इसके साथ ही उपन्यास सरकारी तंत्र की विफलता को भी दिखाता है। साथ ही साथ मीडिया के महत्व को भी आलोच्य उपन्यास में बखूबी चित्रित किया गया है, जिसमें पत्रकारिता की प्रधानता रही है। रेडियो स्टेशन कोसी के लोगों के लिए एक आवाज बन जाता है और उन्हें एक-दूसरे के साथ जुड़ने और अपने अधिकारों के लिए लड़ने में मदद करता है। 'रेडियो कोसी' प्रासंगिक उपन्यास है। जो प्राकृतिक आपदा से उत्पन्न समस्याओं, सरकारी तंत्र की विफलता और मीडिया की शक्ति पर मूल रूप से प्रकाश डालती है।

मानव जीवन सबसे पहले बाढ़ से प्रभावित होता है। लाखों लोग विस्थापित हो जाते हैं, घर डूब जाते हैं और सड़क, बिजली, स्कूल और अस्पताल जैसे मूलभूत सुविधाओं से वंचित गांव सदियों से पीछे चले जाते हैं। स्वास्थ्य समस्याएं बढ़ती जा रही हैं- पानी से फैलने वाले रोगों (जैसे डेंगू, मलेरिया और जलजनित बीमारियाँ), अभाव और मानसिक तनाव बढ़ते हैं। शिक्षा में बाधा आती है; बच्चे स्कूल नहीं जाते और पाठ्यक्रम लंबे समय तक बंद रहता है।

महिलाओं, बच्चों और दलित समुदायों पर सबसे ज्यादा प्रभाव पड़ता है। पुनर्वास की योजनाएँ तटबंधों के बीच फँसे गांवों में एक धोखे के सामान हैं। जबकि सरकार वहाँ केवल वोट मांगने या कानून के नाम पर हिंसा करने आती है, लोग जीवित रहने की जद्दोजहद में लगे रहते हैं। सामाजिक संरचना ध्वस्त होती है- परिवार बिखरते हैं, पलायन बढ़ता है और ग्रामीण क्षेत्रों में निराशा फैलती है। यह परिस्थिति हमारे मानसिक स्वास्थ्य पर भी बुरा असर डालती है । सामाजिक ताने-बाने में दरार पैदा होती है जब लोग अपने भविष्य को असुरक्षित महसूस करने लगते हैं। इसलिए, सहयोग और सहयोग की भावना को समाज के हर स्तर पर बढ़ावा देना आवश्यक है। ताकि लोग एक बार फिर से एकजुट हो सकें और सकारात्मक बदलाव की दिशा में आगे बढ़ सकें, आर्थिक और मानसिक स्वास्थ्य के ठोस उपायों की भी जरूरत है।

सामाजिक प्रभाव, इस उपन्यास में लेखक ने बाढ़ को केवल प्राकृतिक आपदा के रूप में नहीं, बल्कि बाढ़ के कारण होने वाली सामाजिक संरचना के विघटन को भी चित्रित किया है। रेडियो यहाँ सूचना, आवाज़ और प्रतिरोध का प्रतीक है। कोसी तटबंध के भीतर रहने वाले लोगों की सामाजिक हालत बहुत ही जर्जर है। वहाँ लोग अपने गाँव -घर से विस्थापित होकर दूसरे देशों, राज्यों आदि में रोजगार के लिए जा रहा हैं । क्योंकि कोसी तटबंध के भीतर रहने वाले लोगों के जीवन में आजादी के बाद भी कोई खास परिवर्तन नहीं आया हैं , वहाँ लोग आज भी गुलामी का जीवन जीने के लिए मजबूर हैं । उपन्यास का मुख्य पात्र प्रह्लाद भी अपना गाँव छोड़कर पंजाब आता है, जीवनयापन करने के लिए , इतना ही नहीं प्रह्लाद के उम्र के कई नवयुवक विस्थापित होने के लिए मजबूर हैं, यथा – "15 साल की उम्र में पहली बार बस का भों – भों सुना । फिर ट्रेन की सीटी । पहला ठिकाना बना, आप सोच सकते हैं कहाँ ? गोवा में । गोवा में हमने अपनी पहली नौकरी की, एक छोटे-से होटल में। आप सोच रहे होंगे कि कितना मजेदार रहा होगा। हम भी यही सोचकर गए थे, जब काम ही करना है तो गोवा में काहे नहीं करेंगे?"[i]

कृषि-आधारित अर्थव्यवस्था होने के कारण बिहार को बाढ़ से सबसे अधिक नुकसान पहुंचता है। उपजाऊ भूमि जलमग्न हो जाती है, जिससे फसलें (जैसे गेहूं, मक्का और धान) नष्ट हो जाती हैं, पशुधन मर जाता है और मछली पालन भी प्रभावित होता है। हर साल हजारों हेक्टेयर जमीन बाढ़ की चपेट में आती है, जो किसानों को अधिक कर्ज देता है और गरीबी चक्र को गहराता है।

बुनियादी ढांचे, जैसे सड़कें, पुल और घर, लाखों करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है। राज्य सरकार बाढ़ से राहत के लिए हर साल सैकड़ों करोड़ खर्च करती है, लेकिन कोई स्थायी हल नहीं मिलता। यह क्षेत्र लंबे समय में विकास से पीछे छूट जाता है— स्थानीय अर्थव्यवस्था ठप हो जाती है, रोजगार के अवसर कम होते हैं और युवा पलायन करते हैं।

आर्थिक प्रभाव, कोसी क्षेत्र में तटबंधों के बीच चार लाख हेक्टेयर से अधिक जमीन हर वर्ष जलमग्न होती रहती है, जो कृषि और अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है। इस स्थिति को सुधारने के लिए आवश्यक है कि सरकार स्थायी समाधान पर ध्यान केंद्रित करें, जैसे कि जल प्रबंधन और बुनियादी ढांचे में सुधार करना । इसके अलावा, स्थानीय समुदायों को भी सशक्त बनाना होगा ताकि वे अपनी समस्याओं का समाधान स्वयं कर सकें और दीर्घकालिक विकास की दिशा में कदम बढ़ा सकें। इस प्रक्रिया में शिक्षा और प्रशिक्षण महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यदि स्थानीय लोग सक्षम होते हैं, तो वे न केवल अपने लिए बल्कि पूरे क्षेत्र के लिए स्थायी परिवर्तन ला सकते हैं। स्थानीय नेतृत्व को भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ताकि वे विकास परियोजनाओं में सक्रिय रूप से भाग ले सकें। इसके साथ ही, सरकार को ऐसे कार्यक्रमों की व्यवस्था करनी चाहिए जो नवाचार और उद्यमिता को बढ़ावा दें, जिससे सामुदायिक अर्थव्यवस्था में सुधार हो सके।

प्रहलात अपनी प्रेमिका दीपा जी को कोसी तटबंध के भीतर वास्तविकता से अवगत भी कराता है ,वह पूछता है – "हम दीपा जी से पूछे थे, क्या अभी अन्धी नहीं हैं? अपना सब कुछ छोड़कर मेरे साथ इस बियाबान में निकल आई हैं। यह जगह रहने के लिए दुनिया में सबसे बुरी जगह है, मैडम। अभी नहीं, बाद में पता चलेगा। तब अफसोस भी हो सकता है। आप अगर कहिएगा कि अफसोस नहीं होगा तो झूठ कहिएगा। जब बच्चा होने वाला होगा तो घड़ी-घड़ी आपको डॉक्टर के पास जाने का मन होगा। मगर

डिलीवरी के टाइम भी पहुँच गए तो बड़ी बात। बच्चा बड़ा होगा तो सोचिएगा, इसको अच्छे स्कूल में पढ़ाना चाहिए। बहुत सारी बात है मैडम। समय के साथ जादू खत्म हो जाता है। प्रेम-प्यार जो है न, अन्धा बना ही देता है। आज भी आप अन्धी ही हैं।"[ii]

कोसी नदी गाद लाकर अपना रास्ता बदलती है, गांव डूबते हैं, लोग बाढ़ की मार झेलते हुए जीने की जद्दोजहद करते हैं। तटबंधों के बीच के गांवों में न अस्पताल, न सड़क, न स्कूल, न बिजली—स्वतंत्र भारत के नागरिकों को मिलने वाली बुनियादी सुविधाएं तक नहीं पहुंचीं। लोग 21वीं सदी में भी 18वीं सदी जैसी जिंदगी जी रहे हैं। पुनर्वास की योजनाएं धोखा साबित हुईं। राज्य तंत्र वहां विकास या राहत के लिए नहीं, बल्कि वोट और दमन के लिए पहुंचता है।

रेडियो कोसी इन अंधेरे गांवों को एक-दूसरे से जोड़ती है, उनकी पीड़ा को आवाज़ देती है और व्यवस्था की उपेक्षा को उजागर करती है। उपन्यास बाढ़ को केवल पानी की आपदा नहीं, बल्कि मानवीय, सामाजिक और आर्थिक संकट के रूप में दिखाता है। यह उपन्यास स्थानीय संघर्षों और कोसी क्षेत्र की अनसुनी पुकार को भी छूता है। पुष्यमित्र जो स्वयं बिहार के पत्रकार हैं और कोसी क्षेत्र से गहरा जुड़ाव रखते हैं, उन्होने इस उपन्यास के माध्यम से उन लाखों लोगों की कहानी कही है जिन्हें मुख्यधारा की चर्चा में जगह नहीं मिली थी ।

निष्कर्ष – निष्कर्षतः कहा जा सकता हैं कि बाढ़ का सामाजिक–आर्थिक प्रभाव केवल तात्कालिक नुकसान तक सीमित नहीं, यह पीढ़ी-दर-पीढ़ी गरीबी, विस्थापन और विकास की कमी का चक्र बनाता है। रेडियो कोसी उपन्यास इसी चक्र को तोड़ने की कोशिश है। यह हमें याद दिलाता है कि बाढ़ प्रबंधन केवल तटबंध बनाना नहीं, बल्कि स्थानीय समुदायों को आवाज़ देने, उनकी भागीदारी सुनिश्चित करने और स्थायी पुनर्वास की जरूरत है। रेडियो जैसी लोक-माध्यम की शक्ति से गांवों को जोड़ना और उनकी पीड़ा को राष्ट्र के सामने लाना ही इस उपन्यास का सबसे बड़ा संदेश बनता है।

कोसी क्षेत्र की समस्या आज भी ज्यों-की-त्यों है। **रेडियो कोसी** पढ़कर समझ आता है कि बाढ़ सिर्फ पानी नहीं, बल्कि एक पूरी व्यवस्था की विफलता है। सच्ची राहत तभी आएगी जब विकास की योजनाएं तटबंधों के बीच फँसे इन गांवों तक भी पहुंचेंगी। यह उपन्यास न केवल साहित्यिक कृति है, बल्कि कोसी की अनकही सच्चाई का दस्तावेज़ भी है।

---

[i] रेडियो कोसी, पुष्यमित्र, पेज न. 25

[ii] वहीं , पेज न. 40